Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNG 104

Paper Title: साहित्य और हिंदी सिनेमा

Unit: 03

Module Name: साहित्य और सिनेमा का अंतःसंबंध

Name of the Presenter: Dr. Ramita Gurav

NOTES:

साहित्य और सिनेमा का अंतःसंबंध

साहित्य का स्वरूप

साहित्य और मनुष्य का संबंध बहुत पुराना है। हमारी लोककथाएँ, लोकगीत, पौराणिक आख्यान सब आदिम मनुष्य की रचनात्मक अभिव्यक्ति के उदाहरण हैं। समय के साथ मनुष्य ने अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने के नए नए माध्यम ढूँढ़े हैं। जो अनुभव घटित हो चुका है उसे समय में स्थिर करने की इच्छा से आदिम मनुष्य ने अपने अनुभवों को गुफाओं, कंदराओं की दीवारों पर चित्र रूप में कैद किया। उन क्षणों को जिन्हें मनुष्य भूलना नहीं चाहता था उन्हें उसने रेखाओं, रंगों तथा शिल्पों के माध्यम से अपने लिए ही नहीं बल्कि आने वाले समय के लिए भी जीवंत बनाकर रख दिया। भाषा एवं लिपि के विकास

के साथ शब्दों के माध्यम से कल्पना,भावना, बुद्धि, शैली, सौंदर्य दृष्टि के योग से वह साहित्यिक अभिव्यक्ति करने लगा।

लिखित या अलिखित रूप में शब्दों के माध्यम से, कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध आदि अलग अलग विधाओं में रचनाकार के विचार की लालित्यपूर्ण अभिव्यक्ति को हम साहित्य कहते हैं। ऐसा कोई विषय नहीं है जो साहित्य की परिधि में नहीं समा सकता है। इसमें सब के हित का भाव समाहित है।

अंग्रेजी में **साहित्य** को **लिटरेचर** कहा जाता है । व्यापक अर्थ में अक्षरों का जितना विस्तार है, वह सब **लिटरेचर** माना जाता है । जितना शब्द-भंडार और वाणी का विस्तार है वह इसके अन्तर्गत आता है। रूढ़ अर्थ में **लिटरेचर** भावनात्मक तथा रचनात्मक साहित्य का पर्याय माना जाता है।

सिनेमा का स्वरूप-

विज्ञान और तकनीक के विकास ने जिन नए कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यमों का आविष्कार किया है उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है, सिनेमा। सिनेमा के आविष्कार को करीब सवा सौ वर्ष हो चुके हैं। इक्कीसवीं शती में सिनेमा रचनात्मक अभिव्यक्ति के महत्त्वपूर्ण माध्यम के रूप में दुनियाभर में लोकप्रिय हो चुका है। हमारे सांस्कृतिक जीवन का सिनेमा एक अभिन्न हिस्सा बन गया है।

सिनेमा आधुनिक युग की देन है। लेकिन उसके अस्तित्व निर्माण में प्राचीन कला रूपों का भी बड़ा अहम् योगदान रहा है। यह कहें तो गलत न होगा

कि सिनेमा में प्राचीन और आधुनिक कलाओं का सुंदर समन्वय प्राप्त होता है। साहित्य, संगीत, नृत्य, चित्रकला, शिल्प , नाट्यकला आदि कई कलाओं के साथ छायांकन, संपादन, ध्वनिमुद्रण आदि तकनीकी कुशलताओं को आत्मसात करते हुए सिनेमा जीवन के अनेक मार्मिक रहस्यों को अनूठे अंदाज़ में प्रस्तुत करता है। इसमें तकनीक और कला का अद्भुत मेल देखा जा सकता है। जहाँ साहित्य के निर्माण में लेखक का वैयक्तिक योगदान केंद्र में होता है वहीं सिनेमा सामूहिक योगदान से निर्मित कला प्रकार है। विभिन्न कलाओं, तकनीक तथा प्रशासनिक कौशल के सहयोग से सिनेमा का निर्माण होता है।

प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक श्री.चेतन आनंद ने सिनेमा को महान रचनात्मक माध्यम स्वीकार करते हुए कहा था, " सिनेमा कहानी प्रस्तुत करने का एक जरिया है, इसलिए फिल्म एक ज़ुबान है, भाषा है। इसमें कहानी कई तरीकों से प्रस्तुत की जा सकती है- बोले हुए शब्दों में, लिखे हुए शब्दों में, नृत्य में, कविता में, गीत में, हाव भाव में, तस्वीर में। सिनेमा में ये सब समा जाते हैं, सिनेमा सब जरियों का एक समूह है।"(हरीश कुमार, सिनेमा और साहित्य, पृ.6)

नाटक, नृत्य जैसी प्रदर्शनकारी कलाएँ दर्शकों के समक्ष उसी समय प्रस्तुत होती हैं। इसीलिए उन्हें जीवंत कलाएँ कहा जाता है। परंतु सिनेमा तकनीक की मदद से उस जीवंत क्षण को कैद करके जब भी आप उसे देखना चाहोगे तब आपके लिए उसे उपलब्ध कराता है। एक ही नाटक की जितनी भी प्रस्तुतियाँ दर्शक देखते हैं, उनमें संभव है उन्हें अलग-अलग प्रकार का अनुभव हो। लेकिन

सिनेमा में जिस क्षण को कैमरे ने कैद किया है, दर्शक जितनी बार भी उसे देखेगा, दर्शक को पर्दे पर वहीं अनुभव मिलेगा।

सिनेमा और साहित्य का अंतःसंबंध

अब हम साहित्य और सिनेमा के अंतःसंबंध को जानने की कोशिश करेंगे। साहित्य के बिना सिनेमा आकार ही नहीं ले सकता है । चाहे विचार या संकल्पना के स्तर पर हो, कथानक, पटकथा या संवाद तथा गीत के स्तर पर, रचनात्मक साहित्य सिनेमा का अभिन्न घटक है।

साहित्य और सिनेमा को जोड़ने वाले कुछ विशिष्ट बिंदु हैं। जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है सिनेमा की कहानी। चाहे व्यावसायिक सिनेमा हो या कलात्मक सिनेमा, अच्छी पटकथा उसकी प्राथमिक आवश्यकता है जिसके माध्यम से सिनेमा में लेखकीय कल्पना दृश्य-श्रव्यात्मक अनुभव में बदल जाती है। भारतीय सिनेमा ने अपने पौराणिक साहित्य, लोक साहित्य तथा संस्कृत साहित्य से बहुत कुछ ग्रहण किया है। हिंदी सिनेमा का जो रूप आज हमारे सामने है उसे आकार देने में कई तत्वों का समावेश रहा है। **पहला तत्व भारतीय पौराणिक कथाओं का है, जो आमतौर पर बॉलीवुड के प्लाट में कथा के समानांतर एक और कथा और कहानी के भीतर कहानी के समावेश में दिखता है। दूसरा तत्व संस्कृत के नाटकों से लिया गया, जिसमें कथा के समानांतर उपकथा व प्रहसन को जोड़ना तथा रस के सिद्धांत शामिल हैं। तीसरा असर भारत ने लोक नाट्य और पारसी थिएटर का देखा जा सकता है। जो कहानी को एक मैजिकल रियलिज्म में बदल देता**

और कहानी यथार्थवादी ढांचे के साथ गीतों, नाटकीय काव्यात्मक संवादों और सूत्रधार के इस्तेमाल की इजाजत देता है। (दिनेश श्रीनेत,पश्चिम और सिनेमा, पृ.119)

मौलिक फिल्म लेखन के रूप में और दूसरा लिखित या अलिखित साहित्यिक कृतियों के फिल्मांतरण के रूप में साहित्य सिनेमा का हिस्सा बनता है। मौलिक फिल्म लेखन के अंतर्गत फिल्म की कहानी, पटकथा, संवाद, गीत किसी साहित्यिक कृति पर आधारित न होकर खास उस फिल्म के लिए ही लिखे जाते हैं। वहीं कई बार साहित्य की अलग-अलग विधाओं का फिल्मांतरण होते हुए हम देखते हैं। कहानी (तीसरी कसम, शतरंज के खिलाड़ी) ,उपन्यास (देवदास, गोदान, गबन आदि) नाटक(आषाढ़ का एक दिन,घरौंदा,हैदर आदि) पर आधारित फिल्मों का निर्माण, कविता , गीतों (नीरज,हरिवंशराय बच्चन,साहिर, शैलेंद्र आदि) का फिल्म में आवश्यकतानुसार प्रयोग इसके उदाहरण हैं। सिनेमा से संबंधित आलोचनात्मक, अनुसंधानात्मक लेखन भी साहित्य के अंतर्गत आता है।

साहित्यिक कृति पर बनी हर फिल्म सफल होगी इसकी गारंटी नहीं दी जा सकती है। निर्देशक की क्षमता के अनुसार सफल साहित्यिक कृति पर कमज़ोर फिल्म बन सकती है या कमज़ोर कृति पर सराहनीय फिल्म बन सकती है। दरअसल अच्छी फिल्म के निर्माण में पटकथा की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। **विषयवस्तु को रूपात्मक आधार इसी से मिलता है। यह फिल्म का शरीर है।स्थूल अर्थ में फिल्म की कहानी। ऐसी कहानी जिसमें संवाद, चलते-फिरते**

गतिमान चित्र, लोग और दृश्यावली है। पटकथा की वर्णनात्मकता, आख्यान, लोककथा, पौराणिक वृत्त आदि के वेश में प्रकट होती है। निर्माता और निर्देशक अपने उद्देश्यों के अनुरूप पटकथाएँ चुनता है। किसी कहानी या उपन्यास पर फिल्में बनती हैं तो मूल कृति को ज्यों का त्यों नहीं फिल्माया जाता। निर्माता-निर्देशक की चयन दृष्टि और ज़रूरत केंद्र में होती है। (प्रो.कमला प्रसाद, फिल्म का सौंदर्यशास्त्र और भारतीय सिनेमा,पूर्व कथन, शिल्पायन दिल्ली, 2010)

साहित्य की भाषा शब्द पर निर्भर है तो सिनेमा की भाषा में बिंब होते हैं। वह दृश्य-श्रव्यात्मक होती है। जब हम किसी किताब को पढ़ते हैं तो लेखक ने जो लिखा है वह हमारी कल्पना की मदद से हमारे दिमाग में आकार लेने लगता है। लेकिन उसी किताब पर जब फिल्म बनती है तब पात्र अब आपकी कल्पना में नहीं बल्कि चलते-बोलते हुए अभिनेताओं के रूप में पर्दे पर उपस्थित हो जाते हैं।

आम तौर पर साहित्य में रुचि रखने वाले लोग ही साहित्य पढ़ते हैं। लेकिन जब साहित्यिक कृति पर कोई फिल्म बनती है तब वह कृति बहुत सारे लोगों तक पहुँच जाती है। ऐसे लोगों तक भी जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते। इस प्रकार आम लोगों तक साहित्यिक कृति की पहुँच को बढ़ाने का काम सिनेमा यहाँ करता है।

हम यहाँ साहित्य और सिनेमा को दो अलग-अलग कलाएँ मानते हुए चर्चा कर रहे हैं। लेकिन गहराई से विचार करने पर सिनेमा भी साहित्य का ही

एक प्रकार लगने लगता है। जिस प्रकार 'नाटक' साहित्य की एक विधा है वैसे ही 'सिनेमा' भी आधुनिक युग का साहित्य है यह कहें तो गलत न होगा। सिनेमा केवल मनोरंजन ही नहीं करता है बल्कि जीवन से जुड़े गंभीर मुद्दों को भी उठाता है। अपने समय के प्रति प्रतिबद्धता को व्यक्त करता है। राही मासूम रज़ा का यह कथन इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। वे लिखते हैं, **मैं फिल्म को साहित्य का अंग मानता हूँ। आज के मानव की आत्मा की पेचीदगी को अभिव्यक्त करने के लिए साहित्य के पास उपन्यास और फिल्म के सिवा कोई साधन नहीं है। मैं यहाँ यह बहस नहीं छेड़ना चाहता कि कविता का क्या बनेगा। काव्य को साहित्य मानता हूँ और मैं उपन्यास और फिल्म को भी काव्य का ही एक रूप मानता हूँ।जैसे-जैसे जीवन पेचीदा होता गया, वैसे ही वैसे काव्य बदलता गया। महाकाव्य उपन्यास बना और नाटक,फिल्म। कुछ लोग यह कहते हैं कि अच्छी फिल्म केवल वह हो सकती है जो असाहित्यिक हो। मैं यह नहीं मानता। आप कह सकते हैं कि फिल्म दृष्टि की कला है, इसलिए वह साहित्य नहीं हो सकती। साहित्य भी अब दृष्टि ही की कला है। हमने जिस दिन से लिखना सीखा था, साहित्य ने तो उसी दिन बोलना बंद कर दिया था। (**प्रहलाद अग्रवाल, हिंदी सिनेमा बीसवीं से इक्कीसवीं सदी तक, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, 2009, पृ.81)

निष्कर्ष में हम कहेंगे कि साहित्य एवं सिनेमा का अंतःसंबंध विविध आयामी है। बिना किसी कथानक के सिनेमा आकार नहीं ग्रहण कर सकता है। सिनेमा के लिए किया गया लेखन साहित्य के अंतर्गत आता है। कथा, पटकथा

के रूप में रचनात्मक साहित्य सिनेमा का प्राणतत्व है। साहित्यिक कृतियों के फिल्मांतरण द्‌वारा साहित्य आम दर्शकों तक पहुँच जाता है। जब साहित्य और सिनेमा के बीच में स्तरीय कलात्मक आदान-प्रदान होता है, तब एक सशक्त कलाकृति का आनंद लेने का मौका दर्शकों को मिल जाता है।